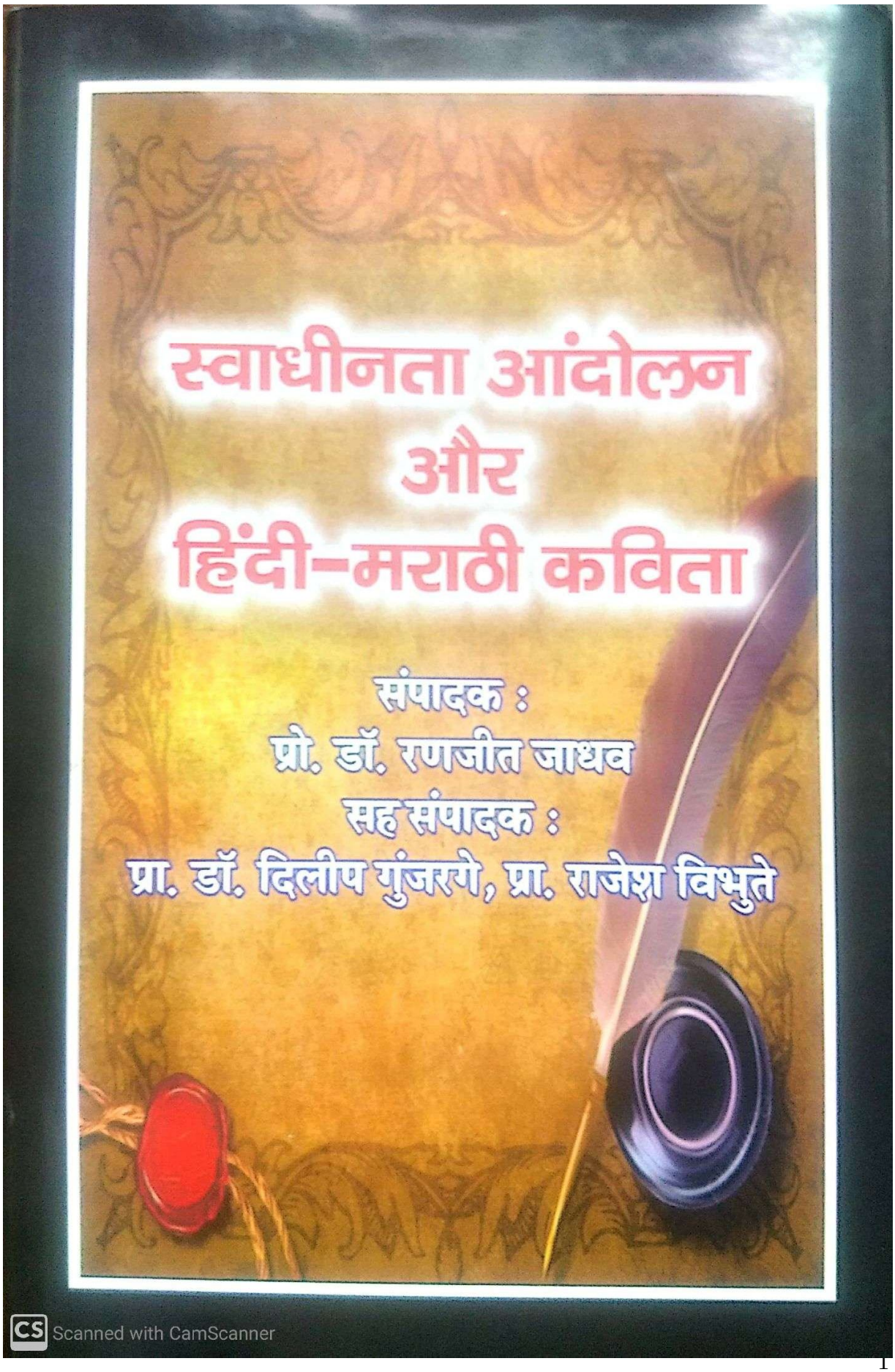

Scanned with CamScanner

पुस्तक : स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी-मराठी कविता
संपादक : प्रो. डॉ. रणजीत जाधव, प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे,
प्रा. राजेश विभुते
© : संपादक
प्रकाशक : **शैलजा प्रकाशन**
प्रकाशक एवं वितरक
57 पी., कुंज विहार, II यशोदा नगर, कानपुर -11
Mob.: 8765061708, 9451022125
E-mail : shailjaprakashan@gmail.com
ISBN : 978-93-80760-97-1
संस्करण : प्रथम 2022
मूल्य : ₹ 725 /-
शब्द साज : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : अनिका डिजिटल, कानपुर

Swadhinta Andolan Aur Hindi-Marathi Kavita

by : Dr. Ranjit Jadhva

Price : Seven Hundred Twenty five Only.

Scanned with CamScanner

23. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान 119
-डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
24. स्वाधीनता आंदोलन के कवि नाथूराम शर्मा शंकर 124
-डॉ. मुरलीधार अच्युतराव लहाडे
25. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान 129
-डॉ. संजीव कुमार नरवाडे
26. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना 135
- प्रा. बालाजी सूर्यवंशी
27. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीय भाव संवेदना 141
-डॉ. सुभाष राठोड
28. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 148
- डॉ. बलवंत बी.एस.
29. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना 151
- प्रा. संतोष शिवराज पवार
30. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान 156
- प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
31. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 161
-डॉ. वनिता कुलकर्णी
32. आधुनिक चेतना के विकास में स्वच्छंदतावादी कविता का योगदान 167
-प्रा. डॉ. कदम एस.एस.
33. स्वाधीनता आंदोलन में ग़ज़लकार कैफ़ी आजमी का योगदान 171
(सरमाया के संदर्भ) -डॉ. जहीरुद्दीन र. पठान
34. स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की भूमिका 175
- प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे
35. मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना 182
- डॉ. वडचकर शिवाजी
36. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी कविता 188
- डॉ. बालाजी भुरे
37. स्वाधीनता आंदोलन के सजग शिपाही माखनलाल चतुर्वेदी 196
-डॉ. मुकुंद कवडे

Scanned with CamScanner

30

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान

प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

वह साहित्य ही क्या जो समाज की उपादेयता और समय की माँग को ध्यान में रखकर न लिखा गया हो? इतिहास साक्षी है कि जब-जब मानवता के खिलाफ साम्राज्यवादी नीतियाँ सर चढ़के बोली हैं तब-तब युगीन साहित्य ने राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर जनता के हृदय में स्वदेशाभिमान की चेतना जगाने का महत् कार्य किया है। युनान की राजधानी अथेन्स पर जब स्पार्टाकस द्वारा बार-बार आक्रमण हो रहा था तब सुकरात ने युगीन कवियों को साहित्य का मनोरंजन और भाषासौंदर्य में उलझने के बजाय मातृभूमि के लिए मर मिटने के राष्ट्रप्रेम के गीत लिखने की हिदायत दी थी। भारत जैसे राष्ट्र ने लगभग डेढ़सौ साल अंग्रेजों की अन्यायी और शोषण की मानसिकता को सहा है, पराधीनता का बेहाल जीवन जिया है। ऐसी गुलामी की भयावह दासता के विरोध में हिंदी साहित्य कैसे अछूता रह सकता है? सबसे अच्छी यह बात थी कि हिंदी के अधिकतर कवियों ने मात्र साहित्य निर्माण में योगदान देकर साहित्यधर्मी का कार्य नहीं किया बल्कि ये सजग साहित्यकार के साथ-साथ सतर्क स्वतंत्रता सेनानी भी थे। जिन्होंने राजनीतिक चेतना से ओतप्रोत होकर एक ओर स्वतंत्रता सेनानी के रूप में स्वाधिनता आंदोलन में सक्रिय सहभागिता दर्ज की तो दूसरी ओर उनकी कलम जुल्मी और अत्याचारी अंग्रेजों के विरोध में क्रांति के गीत लिखने में भी लीन रही। चाहे उनके साहित्य सृजन का उद्देश्य हो अथवा संपूर्ण जीवन का लक्ष्य हो दोनों एक ही थे, और वह उद्देश्य था भारत को स्वतंत्रता दिलाना। इसलिए इनकी कविताएँ मात्र कविता नहीं बल्कि अंग्रेजों पर अंगार बनकर बरसी है।

आधुनिक युग में भारतेंदु युगीन काव्य की राष्ट्रीय चेतना राजनीतिक दृष्टि से प्रथम चरण था। द्विवेदी युग में मातृभूमि के प्रति समर्पित भावना और स्वाधिनता प्राप्ति के स्वर धीरे-धीरे मुखरित हुए थे। राष्ट्रीयता की सबसे उदात्त कल्पना स्वच्छंदतावादी युग में ही उजागर हुई। साम्राज्यवादी वर्जनाओं के बीच हिंदी कवि अपनी क्षमता के अनुसार साहित्य सृजन से जुड़े रहे। हालाँकि इन्हें अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। वे हर समय साम्राज्यवादी दबावों को झेलते रहे। भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रेमचंद, मैथिलिशरण गुप्त आदि अनेक साहित्यकार अंग्रेजों के दबाव का विरोध करते हुए साहित्य में राष्ट्रप्रेम की भावना उजागर करते रहे। जिन्होंने साम्राज्यवादी शोषण का

Scanned with CamScanner

खुलासा कर स्वदेशी आंदोलन की भूमिका तैयार की। भारतेंदु अपने 'अंधेर नगरी' इस नाटक में प्रतीकात्मक रूप से समकालीन शासन की आलोचना करते हुए लिखते है-

"अंधेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा॥"[1]

महावीरप्रसाद द्विवेदी स्वदेशी वस्तुओं के समर्थक थे। उनके अनुसार विदेशी वस्तुओं की ओर हमारा झुकाव हमारी जनता को ही बेरोजगार कर देगा। जिससे अंग्रेजों को अधिक लाभ होगा। वे लिखते हैं-

"विदेशी वस्त्र हम क्यों ले रहे है।
वृथा धन हम देश का क्यों दे रहे है॥
हजारों लोग भूखे मर रहे है।
पड़े वे आज या कल कर रहे है॥"[2]

द्विवेदीयुगीन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त की कविता में राष्ट्रीयता के स्वर प्रखर रूप से परिलक्षित हुए हैं। साकेत, भारत-भारती जैसे काव्य में राष्ट्रप्रेम की भावना हर क्षण झलकती है। उनकी 'व्यापार' जैसी कविता भारतीय जनमानस की आँखे खोलने को मजबूर कर देती है। उनके 'साकेत' काव्य में साम्राज्यवादी अन्याय के प्रति विरोध का स्वर मुखर हुआ है-

"भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बंधन में
सिंधु पार वह बिलख रही है व्याकुल मन में
सजे अभी साकेत बजे हाँ जय का डंका
रह न जाय अब कहीं किसी रावण की लंका"[3]

गांधीवादी विचारधारासे प्रभावित सोहनलाल द्विवेदी जी हिंदी काव्य के लोकप्रिय कवि रहे। जिनकी कविताएँ स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों के लिए अंगारों के गीत बन गये। जिनमें आज़ादी के प्रति परवानों की भीड़ लगी रहने की भावना व्यक्त हुई है-

"आज चली है सेना फिर से धीरवीर मस्तानों की,
आज़ादी के दीपक पर है भीड़ लगी परवानों की।
मनमोहन है शंख बजाता, कुरूक्षेत्र में हलचल है,
वर्धा के आँगन में सजता फिर शूलों का दलबल है,
चले जवाहर से नर नाहर बनने बंदी दीवाने,
औ''आज़ाद' कफ़स को लेने, पीने विष के पैमाने।
कौन रोक सकता टोली आगे बढ़नेवालों की।"[4]

हिंदी कविता में छायावाद और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में स्वाधीनता आंदोलन की प्रवृत्ति अधिक प्रखरता से अभिव्यक्त हुई है। छायावाद के आधारस्तंभ

CS Scanned with CamScanner

जयशंकर प्रसाद के साहित्य का स्रोत तो ऐतिहासिक रहा है। उनके हर विधा में अतीत का गौरव गान ही व्यक्त हुआ है। उनके कामायनी, महाराणा का महत्व, वीर बालक जैसी कविताओं आधार जहाँ पौराणिक या मध्यकाल का रहा हो किंतु उसकी आधारभूमि ब्रिटिशकाल ही रही है। दो महायुद्धों के बीच की विभिषिका को व्यक्त करनेवाला महाकाव्य 'कामायनी' में भी राष्ट्रीय आंदोलन का संघर्ष चित्रित हुआ है-

"सिर नीचा कर किसकी सत्ता सब करते स्वीकार
यहाँ सदा मौन हो प्रवचन करते जिसका अस्तित्व कहाँ
शक्ति और जागरण चिह्न सा लगा धधकने अब फिर से
उस एकांत नियतिशासन में चले विवश धीरे-धीरे।"[6]

छायावादी काव्य के दूसरे प्रमुख हस्ताक्षर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताएँ तो राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख स्वर बनकर उभर आयी है। निरालाजी लेखन और कर्म के दृष्टि से अर्थात् उनका संपूर्ण व्यक्तित्व राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत था। उनकी समकालीन कवयित्री महादेवी वर्मा 'पथ के साथी' इस संस्मरणात्मक निबंध में उनके संदर्भ में लिखती है- "किसी अन्याय के प्रतिकार के लिए उनका हाथ लेखनी से पहले उठ सकता था।"निरालाजी 'महाराज शिवाजी का पत्र' इस लंबी कविता में ब्रिटिश साम्राज्यवादी को मुगल साम्राज्य साथ तुलना करके स्वतंत्रता की ललकार को व्यक्त करते है-

"उठती जब नग्न तलवार है स्वतंत्रता की
कितने ही भावों से
याद दिला घोर दुख दारूण परतंत्रता का
फूँकती स्वतंत्रता निज मंत्र से
जब व्याकूल कान,
कौन वह सुमेरू
रेणु-रेणु जो न हो जाया।"[7]

निरालाजी की 'जागो फिर एक बार' यह कविता तो अतीत के गौरव और स्वर्णमय क्रांति का स्मरण दिलाते हुए ब्रिटिश शासन के विरोध में विद्रोह करने की लिए प्रेरित करती है-

"शेरों की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार!
× × ××
पश्चिम की उक्ति नहीं-
गीता है, गीता है-

CS Scanned with CamScanner

स्मरण करो बार बार
जागो फिर एक बार।"[8]

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और समुद्राकुमारी चौहान आदि कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में अपना बलिदान दे रहे क्रांतिकारियों के शहादत और उनकी वीरता को अपनी कविता का विषय बनाया। सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ तो आग के शोले बन पड़ी है। कवयित्री जलियांवाला बाग के करुण प्रसंग को अपनी कविता में व्यक्त करती है-

"मुझे कहा कविता लिखने को, लिखने बैठी में तत्काल
पहले लिखा जलियांवाला, कहा कि बस हो गए निहाल।"[9]

माखनलाल चतुर्वेदी के लिए हथकड़ी तो आभूषण बनकर जीवन को अलंकृत कर रही है-

"क्या?देख न सकती जंजीरों का गहना
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना।"[10]

निष्कर्ष रूप में कहा जाय तो स्वाधीनता आंदोलन में विशेष रूप से स्वतंत्रतापूर्व हिंदी कविता समय की महत्ता को ध्यान में रखते हुए युग की वाणी बनकर निसृत हुईहै। इन्होंने भारतीय जनमानस में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने के लिए और अन्यायी अंग्रेजों की सल्तनत को खदेड़ने के लिए अपने कविता का माध्यम बनाया। जो कविताएँ मात्र साहित्यिक विधा नहीं बल्कि स्वतंत्रता के गीत बनकर स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा के अंगार बन गये। निःसंदेह स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास हिंदी कविता के बिना अधूरा रहेगा।

संदर्भग्रंथ सूची :

1) अंधेर नगरी - भारतेंदु हरिश्चंद्र, राजकमल प्रकाशन, पैपर बैक्स प्रा. लि., नई दिल्ली, आवृत्ती, 2007, पृ. 58
2) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी साहित्य (1920-1947)- शैलेशकुमार उपाध्याय, मध्यकालिन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 2000, पृ. 39
3) उत्तर औपनिवेशिक विमर्श और हिंदी कविता - सं. पी. रवि, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), प्रथम संस्करण 2011, पृ. 60
4) साहित्य के विविध आयाम - डॉ. सुदेश, नालंदा प्रकाशन, महारौली, नई दिल्ली, 30, प्रथम संस्करण 1983, पृ. 54
5) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन,और हिंदी साहित्य (1920-1947)- शैलेशकुमार उपाध्याय, मध्यकालिन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 2000, पृ. 136
6) वही, पृ. 176

Scanned with CamScanner